International Journal of Humanities and Arts
www.humanitiesjournals.net
Online ISSN: 2664-7702, Print ISSN: 2664-7699
Received: 26-07-2022, Accepted: 28-08-2022, Published: 05-09-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 45-52

बाढ़ और आजीविकाः काजीपुर गाँव के विशेष सन्दर्भ में

प्रभाकर सिंह
मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.33545/26647699.2022.v4.i1a.74

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र शोधार्थी द्वारा काजीपुर गाँव में ''आजीविका को लेकर बाढ़ के समय किया गया अध्ययन है जिसमें प्रभावित होने वाली आजीविका और उसके दौरान गाँव के लोगो का प्रवासन/पलायन का अध्ययन किया गया जिसमें होमियोस्टैटिक, विकासात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। इसमें शोधार्थी ने काजीपुर गांव के 200 परिवारो के कुल 1710 व्यक्तियों के आजीविका पर बाढ़ के प्रभाव से संबधित तथ्यो का परीक्षण किया है जो शोधार्थी के प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्य संकलन के श्रोतो का परिणाम है

कुटशब्दः बाढ़, आजीविका, प्रवासन, होमियोस्टैटिक, विकासात्मक दृष्टिकोण

प्रस्तावना

बाढ़ का अर्थ

सामान्य रूप से विस्तृत स्थलीय भाग पर अधिक समय तक जल में जमाव को बाढ़ कहते है। यह स्थिति सामान्यतः नदियों में अत्यधिक जल के कारण होती है जब नदियों में अथाह जल अपने किनारे के स्थानीय भागों में फैल जाता है जो भू–भाग जलमग्न हो जाता है इसे ही बाढ़ के रूप में जाना जाता है। जो प्राकृतिक पर्यावरण का एक विशिष्ट गुण है।

इस प्रकार बाढ़ एक प्राकृतिक घटना है, जब इससे अत्यधिक जन–धन हानि होती है तो यह आपदा का रूप ले लेती है। मानव क्रियाएं जिसकी वृद्धि का कारण बनती है। इस प्रकार बाढ़ प्राकृतिक और मानवजनित दोनों है। अधिकांशतः बाढ़ जलोढ़ मैदानो में बहने वाली नदियों के कारण आती है। विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 3.5% भाग में मैदानी बाढ़ का विस्तार है। जहाँ विश्व से 16.5% जनसंख्या निवासी करती है (आपदा प्रबन्धन, सविन्द्रर सिंह, पृष्ठ–171)। भारत में बाढ़ से मानवता को कुचलने वाली नदियों के रूप में गंगा, यमुना, रामगंगा, घाघरा, गोमती, गंडक, कोसी, दामोदर आदि उत्तर भारत में प्रमुख है। वही ब्रह्मपुत्र उत्तर–पूर्व भारत में, तथा कृष्णा, गोदावरी, महानदी, नर्मदा, तापी आदि सभी भारत में बाढ़ जैसी समस्या से जन्म देती है।

सामान्य रूप से विद्धानो ने बाढ़ का वर्गीकरण निम्न रूप से किया है :

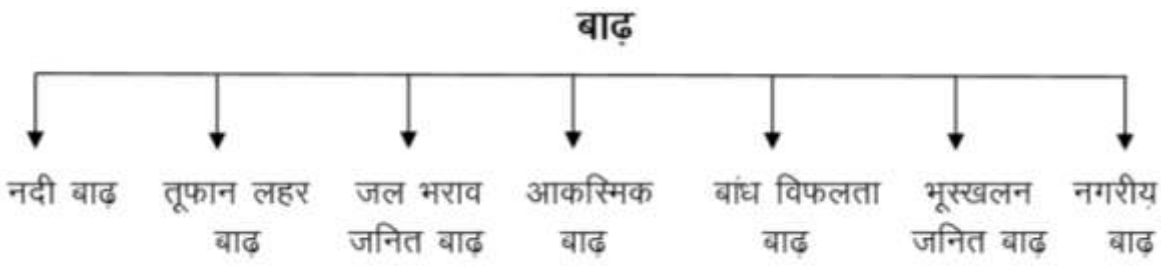

बाढ़ के कारण

भारतीय राज्यों में बाढ़ का प्रमुख कारण प्राकृतिक एवं मानवजनित दोनों है जहाँ प्राकृतिक कारण के रूप में लगातार भारी वर्षा, नदियों का अत्यधिक घुमावदार रास्ता, आकस्मिक मूसलाधार वर्षा इत्यादि के कारण नदियों तथा आस–पास के क्षेत्रों में जल स्तर का बढ़ जाना है वही मानवीय कारणों के रूप में वनों का विनाश, नगरीकरण का विस्तार, खराब कृषि तकनीक और पानी के प्राकृतिक जलमार्ग में अवरोध इत्यादि है।

उपरोक्त सभी कारकों को निम्नरूप से विस्तारित किया जा सकता है

- लगातार कई दिनों तक वर्षा होने के कारण नदियों में निचले भाग में अचानक जल के आयतन में वृद्धि हो जाती है जिस कारण अपार जलराशि नदियों के आस–पास के क्षेत्रों में फैल जाती है जिससे बाढ़ का संकट उत्पन्न हो जाता है। आकस्मिक वायुमण्डलीय तूफानों से होने वाली घनघोर वर्षा के कारण केवल उन्ही क्षेत्रों की नदियों में बाढ़ आ सकती है जिनमें जल वर्षा की प्रकृति मौसमी होती है। इसी तरह जलवायु तथा सागरीय प्रदेशों में वर्षाकाल में प्रचण्ड तूफानों से होने वाली दीर्घकलिक मूसलाधार जलादृष्टि के कारण संहारक बाढ़ का अभाव हो जाता है क्योंकि मौसमी जलवर्षा क्षेत्रों की नदियों में जल का आयतन अत्यधिक कम होता है जिस कारण जल का विर्सजन कम होता

है। उदाहरण स्वरूप प्रयागराज में जुलाई–अगस्त में गंगा नदी का जल विर्सजन 40 से 50 हजार घन मीटर प्रति सेकेण्ड हो जाता है जो शीत और ग्रीष्म में बहुत कम होता है। इस प्रकार वर्षाकाल में नदियों के जल स्तर में वृद्धि के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

- भारत के अधिकांश क्षेत्र जो शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के रूप में जाने जाते है, वहाँ सामान्यतः वर्षा कम होती है किन्तु अचानक अप्रत्याशित वर्षा हो जाने से नदियों में एकाएक जल स्तर बढ़ जाता है जिसे नदियाँ समाहित नहीं कर पाती है उदाहरण स्वरूप– जयपुर में 1981 की बाढ़, 2006 में राजस्थान के जैसलमेर में रेगिस्तान में बाढ़, 2005 में मुम्बई की बाढ़, 2006 में गुजरात के सूरत में बाढ़ जिसने पिछले 200 वर्षो का रिकार्ड तोड़ दिया।
  ऐसे ही अचानक से लगातार वर्षा से महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्र और छत्तीगढ़ बाढ़ से घिरते रहते है। 2013 में उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग, चमोली तथा पिथौरागढ़ में बादल फटने से अचानक आयी बाढ़ ने बहुत बड़ी जन–धन हानि की स्थिति उत्पन्न कर दी।
- नदियों के घुमावदार मार्ग उत्तरभारत में बाढ़ के प्रमुख कारण है क्योंकि जिन नदियों के मार्ग सर्पिलाकार होते है वे नदियों से जला विर्सजन के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है। जिस कारण जल का प्रवाह वेग कम हो जाता है और अधिक वर्षा और मौसमी वर्षा के समय नदियों का जल किनारे के भागों में जल्दी ऊपर आ जाता है और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
  उपरोक्त कारण प्राकृतिक घटकों के रूप में बाढ़ जैसी स्थिति में जन्म देते है अब मानवीय कारको का विस्तार भी आवश्यक है जिसे निम्न रूप में अवलोकित किया जा सकता है।
- आधुनिक विकास की दौड़ में मानव ने प्रकृति के संसाधनों के दोहन का जो सिलसिला प्रारम्भ किया वह मानव संकट का एक बहुत बड़ा कारण है बाढ़ के परिप्रेक्ष्य में वनों की कटाई मानवजनित कारणों में सबसे महत्वपूर्ण है जो बाढ़ के लिए उत्तरदायी है क्योंकि : वनो की कटाई के कारण नदियों के किनारे धरातलीय सतह मैदान के रूप में बदल जाती है जिस कारण वर्षा के जलो को भूमि के स्पन्दन ग्रहण नहीं कर पाते और जल नालो, छोटी–छोटी सरिताओं से होते हुए जल्दी से नदी तक पहुँच जाते है और नदियों की जलराशि में वृद्धि हो जाती है और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
  अवसादीकरण की प्रक्रिया में यह कहा जाता है कि वनो की कटाई के कारण धरातलीय बाढ़ जल में वृद्धि होने से मृदा का अपरदन होने लगता है जिस कारण नदियों में अवसाद भार बढ़ जाता है जिस कारण नदियों के तलियों का स्तर ऊपर उठने लगता है और नदियों के घाटियों की जलधारण क्षमता कम हो जाती है और वर्षा के समय जल वेग बढ़ने से सारा जल फैलने लगता है और बाढ़ का संकट उत्पन्न हो जाता है। उत्तर भारत की गंगा, यमुना, रामगंगा, गंड़क, कोसी, घाघरा, तिस्ता इत्यादि इसी कारण से बाढ़ जैसी तबाही उत्पन्न करती है।
- इस आधुनिक युग में भौतिक संसाधनों के एकत्रण और निर्माण में मानव नगरीकरण के द्वारा एक नये प्रकार के संसार का निर्माण कर रहा है जहाँ वह पक्की सड़के, मकान बना रहा है जिससे भूमि की जल अवशोषण क्षमता प्रभावित हो रही है जिस कारण वर्षा होने पर जल छोटे–छोटे मार्गो से नदियों में शीघ्रता से पहुँचकर उसके आयतन में वृद्धि कर रहे है और मानव बस्तियों, शहरीकरण के कारण नदियों के बहाव क्षेत्रों में बन रही है। जिस कारण जल विर्सजन का मार्ग प्रभावित हो रहा है। नगरीकरण बढ़ने से शहरों के कूड़ा–करकट नदियों में बहायें जा रहे है जिस कारण नदियों की घाटियाँ जल्दी भर जाती है और इस सभी कार्यो से बाढ़ का संकट उत्पन्न हो जाता है।
  बाढ़ में जल में गन्दे, कचरे, मल बह कर मानव बस्तियों में आ जाते है जिस कारण संक्रामक रोग मानवजीवन में विकट संकट पैदा करते है। उत्तर प्रदेश के अधिकांश जिलो में जो गंगा नदी के किनारे है यह उसके पास है इस प्रकार की समस्या से प्रतिवर्ष संघर्ष करते है।
- बाढ़ का एक विशेष कारण जल के प्राकृतिक प्रवाह में अवरोध का आ जाना है। जो प्राकृतिक और मानवजनित दोनो है। हिमालय के क्षेत्रो में भूस्खलन की घटना से अक्सर नदियों का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है और पद अस्थायी बांध संरचना जब टूटती है तो भयंकर तबाही वाली बाढ़ उत्पन्न होती है। यह प्राकृतिक है। मानव जनित अवरोध बाँध के रूप में आज देखे जा सकते है। जहाँ नदियों पर बाँध बनाकर उनका मार्ग अवरूद्ध किया जाता है। जिनके टूटने से भयंकर तबाही आती है भारत में 1917 तिगरा बाँध (मध्य प्रदेश), 1958 में कदम बाँध (आन्ध प्रदेश), 1961 में पनरोट बाँध (महाराष्ट), 1979 में मोरवी बाँध (गुजरात), 1979 में जसवन्तनगर बाँध (राजस्थान) और 1991 में चन्दोरा बाँध (मध्य प्रदेश) इत्यादि इसके प्रमुख उदाहरण है।

इस प्रकार बाढ़ के प्राकृतिक और मानवीय कारणों से प्रतिवर्ष जन–धन हानि एक नियति बन गयी है। जिसका प्रभाव समाज में व्यापक रूप से पड़ता है। शोधार्थी ने इन्हीं उपरोक्त कारण परिप्रेक्ष्य में अपने अध्ययन क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के बलिया जिले की सिकन्दरपुर तहसील के काजीपुर गाँव में बाढ़ प्रसंग को मानव वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करके प्रस्तुत शोधपत्र का निर्माण किया है।

शोधार्थी के अध्ययन क्षेत्र काजीपुर गाँव में बाढ़ का कारण गंगा, घाघरा, टोंस और मंगई नदियां है क्योकि यह सम्पूर्ण क्षेत्र इन्हीं नदियों से घिरा है, जहाँ प्रतिवर्ष लगभग 60% भाग बाढ़ से प्रभावित हो जाता है। इस क्षेत्र में नदियों का जल जिसके पूरे धरातल के क्षेत्रो से आगे जलराशि का अत्यधिक कम वन क्षेत्र जिसके कारण आवासीकरण की समस्या से नदियों में जल का फैलाव चारो तरफ हो जाता है। काजीपुर क्षेत्र के आस–पास के भौगोलिक स्वरूप में छोटी–छोटी नदियाँ और नालों का एक जल है जो बड़ी नदी गंगा–घाघरा में जल को विसर्जित करती है के कारण भी इस क्षेत्र में जल आयतन बढ़ जाता है और बाढ़ की समस्या जन्म लेती है। भौतिक रूप से सिकन्दरपुर तहसील के लगभग 12 गाँव की भौगोलिक स्थिति क्षेत्र के निचले भाग में है जिस कारण बाढ़ के उत्पन्न हो जाने की दशा के बाद पानी के निकलने का वेग बहुत मन्द रहता है और पानी का जमाव काफी दिनों तक रहता है जो इस क्षेत्र की विशिष्ट बाढ़ स्थिति को दर्शाता है और सामान्य जनजीवन प्रभावित होता है। शोध कार्य के दौरान लोगों से बात करके यह ज्ञात होता है कि

शोधार्थी के अध्ययन क्षेत्र में जो हिस्सा है, उसमें घाघरा नदी के तीव्र वेग से भूमि कटान की विकराल समस्या उत्पन्न होती है। वर्षो से इसके कारण बाढ़ के समय गाँव के गाँव जलधारा में विलीन होते रहे है।

इस प्रकार बलिया जनपद की बाढ़ में प्राकृतिक कारको की भूमिका सर्वप्रमुख है। जिसमे धरातलीय, अधिवर्षा, नदियों में विविध स्वरूप एवं मार्ग परिवर्तन, मृदा अपरदन इत्यादि कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इन सभी के परिणाम स्वरूप बलिया जनपद के सिकन्दपुर तहसील का काजीपुर गाँव प्रतिवर्ष बाढ़ ग्रस्त हो जाता है और जिसका प्रभाव वहाँ के निवासियों पर स्पष्ट दिखाई देता है।

बाढ़ जनित प्रभाव में से सबसे व्यापक प्रभाव व्यक्त्यिों की आजीविका पर पड़ता है। जिसे शोधार्थी ने बाढ़ के कारण अजीविका पर सामाजिक प्रभाव के रूप में प्रस्तुत शोधपत्र में विष्लेषित किया है।

बाढ़ के कारण आजीविका पर प्रभाव

व्यक्ति की आजीविका का सम्बन्ध उसकी आवश्यकता से है। जिसे वह जीवित रहने के लिए प्राप्त करना चाहता है जिसको प्राप्त करने के लिए वह एक प्रणाली का निर्माण करता है यह प्रणाली ही उस व्यक्ति, परिवार, गाँव या सम्पूर्ण समाज की अर्थव्यवस्था या अजीविका प्रणाली कहलाती है। इसीलिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहते है ''एक सही अर्थव्यवस्था सामाजिक न्याय सुनिश्चित करती है, दुर्बल व्यक्तियों सहित सभी कर्म भलाई के लिए प्रयत्न करती है और अच्छा जीवन जीने के लिए अपरिहार्य है।''

प्रत्येक समाज जीवित रहने के लिए अपने मूल तत्व के रूप में व्यक्तियों की आजीविका रूपी संसाधन प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है जिससे व्यक्ति अपना जीवन सुचारू रूप से व्यतीत करता है किन्तु समाज में अनेक ऐसी नितियाँ होती है जिससे व्यक्ति की अजीविका प्रतिकूल रूप से प्रभाावित होती है बाढ़जनित आपदा ऐसा ही एक प्रसंग है जिससे मानव जीवन सदैव से प्रभावित होता आया है।

शोधार्थी के अध्ययन का विषय बाढ़ की विभीषिका है इसके आलोक में शोधार्थी ने बलिया जिले के काजीपुर गाँव के लोगों की आजीविका पर प्रभाव का अध्ययन किया है और अजीविका पर प्रभाव को दिखाने के लिए व्यक्तियों की आय और व्यय को आधार बनाया है। जहाँ अजीविका के प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए काजीपुर गाँव के 1710 लोगों और कुल 200 परिवारों को आय–व्यय के स्रोत के रूप में वर्गीकृत करके तालिका बद्ध किया गया है। जो शोधार्थी के स्वयं सर्वेक्षण और स्वविवेक का परिणाम है। जो निम्नलिखित है :

तालिका 1: बाढ़ के कारण आजीविका पर प्रभाव

परंपरागत अजीविका	व्यावसायिक अजीविका	उद्योगिक अजीविका	बजार अजीविका	सामान्य अजीविका	सरकारी/गैर सरकारी अजीविका
लोहे का कार्य	दूध की डेयरी	ईट भट्टा	फेरी वाले	कृषि कार्य	केन्द्र सरकार
लकड़ी का कार्य	पाव रोटी	कोल्ड स्टोर	ठेला वाले	कृषक मजदूर	राज्य सरकार
मिट्टी बर्तन	मसाला	सीमेन्ट गमला	सब्जी वाले	घरेलू नौकर	प्राइवेट नौकरियाँ
बाल काटने का कार्य	नमकीन	राईस मिल	चाय नाश्ता	पुजारी	
कपड़ा सिलने और धोने का कार्य	अगरबत्ती	फास्ट फूड निर्माण	मिठाई की दुकान	चालक	
मृत जानवर के चमड़े का कार्य	पत्तल/गिलास		किराना की दुकान	राजगीर	
पशुपालन	मुर्गी पालन		इलेक्ट्रानिक		
अन्य	मत्स्य पालन		बीज भण्डार		
			खाद्य भण्डार		
			मेडिकल स्टोर		

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण

परम्परागत अजीविका पर बाढ़ का प्रभाव

प्रत्येक समाज अपने स्थानीय वातावरण एवं तकनीकि के अनुरूप आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आर्थिक प्रणाली का निर्माण करता है जिसके माध्यम से वह भूख, प्यास, काम, निद्रा, भय जैसे आधारभूत आवश्यकता (मैलिनॉस्की) की पूर्ति करता है। जिसके माध्यम से करता है वही उसकी अजीविका कहलाती है। जो संस्कृति का भाग है।

भारतीय ग्रामीण परिवेश में जजमानी व्यवस्था का आर्थिक पहलू ही परम्परागत अजीविका का स्रोत रहे हैं समय के क्रम में भौतिक प्रगति ने जजमानी व्यवस्था के मानकों को अवश्य ही सीमित किया है किन्तु आज भी गाँव में अपने सीमित अर्थो में दिखाई देती है। जो जातिगत कार्यो के रूप में देखने को मिलती है। जजमानी व्यवस्था ग्रामीण समाज में जहाँ जातियों की पहचान सुनिश्ति करती है वही समुदाय के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय भी प्रदर्शित करती है जिसका आकार आर्थिक है। शोधार्थी ने बलिया के काजीपुर गाँव के अध्ययन के दौरान स्वयं के विवेक से परम्परागत आजीविका के रूप में अनेक कार्यो को चिन्हित किया है जैसे : लोहार द्वारा लोहे का कार्य, बढ़ई द्वारा लकड़ी के कार्य, कुम्हार द्वारा मिट्टी के कार्य, नाई द्वारा बाल काटना, धोबी द्वारा कपड़े साफ करना, चहचार द्वारा मृत जानवरों के चमड़े का कार्य, इसी प्रकार, पशुपालन और अन्य कार्य है।

उपरोक्त सभी कार्यों द्वारा एक ग्रामीण संजाति समूह दूसरे संजाति समूह को अपनी सेवा प्रदान करता है बदले में उसे वस्तु, पैसा, और अन्य सामग्री प्राप्त होती है जिसमें वह अपनी जीविका का निर्वहन करता है।

चूँकि बलिया का काजीपुर गाँव विविध जातियों से निर्मित है जहाँ शोधार्थी ने 19 प्रकार की जातियों को चिन्हित किया है जो किसी न किसी रूप में एक दूसरे से अन्तर सम्बन्धित है।

बलिया के काजीपुर गाँव में बाढ़ की समस्या इतनी पुरानी है कि वह उनकी नियति बन गयी है जिसका सबसे भयानक प्रभाव परम्परागत आजीविका के स्रोतो पर पड़ता है। उदाहरण स्वरूप क्षेत्र के अवलोकन और लोगों के साक्षात्कार से पता चलता है कि बाढ़ के समय में सारा ग्रामीण क्षेत्र जलमग्न रहता है जिस कारण लोहार, कहार, बढ़ई इत्यादि जाति में

लोगों को कार्य करने के लिए न स्थान होता है, न ही सामग्री होती है जिससे वे उपकरणों का निर्माण कर सके, और अपनी सेवा के बदले मूल्य प्राप्त कर सके। वह कार्य विहीन हो जाते है और जीवित रहने के लिए संघर्ष करते है अपने मूल स्थान को छोड़कर कुछ समय के लिए दूसरे स्थान पर निवास करते है जहाँ भोजन, वस्त्र, दवा, अस्थायी घर के लिए पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर हो जाते है जिसमें केन्द्र/राज्य और स्थानीय प्रशासन के द्वारा जो सहायता प्राप्त होती है वो उसी से अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बलिया के काजीपुर गाँव में बाढ़ के दौरान परम्परागत अजीविका के क्षेत्र में बहुत ही ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव दिखाई पड़ते है : जहाँ लोगों के पास कोई कार्य नहीं होता है।

- लोग पूर्व में जमा किये गये धन–सम्पत्ति से जीवित रहते है।
- अधिकांश लोग सरकारी सहायता द्वारा ही जीवित रहते है।
- कुछ लोग अपना गाँव छोड़कर दूसरे क्षेत्रों में घरेलू नौकर बनकर जीवन यापन करते है।
- घर में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण महिला और बच्चे वही गाँव के बाहर सरकार द्वारा बनाये गये कैम्पों में रहते है। पुरुष वर्ग दिन में काम की तलाश में बाजारों में घूमते है।

अतः परम्परागत अजीविका से जुड़े हुये लोगों का जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण होता है जिसमें व्यक्ति जीवन रहने के लिए अनेक प्रयास करता है लेकिन बाढ़ की विभिषिका उसे मजबूर करती है वह महज प्रकृति के प्रकोप को सहता है और उसे अपनी नियति मानकर भूखे–पेट अपना जीवन व्यतीत करता है।

बाढ़ के दौरान व्यवसायिक आजीविका पर प्रभाव

जनसंख्या मानव समाज का आधार है। किसी समाज में व्यक्तियों की संख्या ही उस समाज का आकार निर्मित करती है। जैसे–जैसे लोगों की समाज में संख्या बढ़ती है उसी प्रकार उनकी आवश्यकताएं भी बढ़ती है। बढ़ती आवश्यकताएं जब परम्परागत कार्यो से पूरी नहीं की जा सकती तब व्यक्ति कार्य के विकल्प की तरफ अग्रसर होता है, व्यवसाय इन्हीं कार्यो का विकल्प है। जो व्यक्तियों द्वारा किया जाता है और प्राप्त आय से वह अपना जीवन यापन करते है।

बलिया के काजीपुर गाँव क्षेत्र में दूध की डेयरी, पावरोटी, मसाला पैंकिग, नमकीन निर्माण, अगरबत्ती निर्माण, पत्तल निर्माण, मुर्गीपालन, मत्स पालन इत्यादि को शोधार्थी ने स्वयं के विवेक से व्यवसायिक अजीविका के रूप में वर्गीकृत किया है।

बाढ़ के दौरान व्यावसायिक अजीविका पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिसमें सभी काम रूक जाते है, निर्माण उपकरण क्षतिग्रस्त हो जाते है, निर्माण सामग्री खराब हो जाती है, इन व्यवसायों में लोग रोजगार विहीन हो जाते है। जिससे इनका आर्थिक संकट गहरा हो जाता है और गाँव छोड़कर बाहर के क्षेत्रों में कार्य की तलाश में पलायन कर जाते है। स्त्री और बच्चे घर के मूल सदस्य है जो गाँव के बाहर ही टेन्ट, तम्बू और शरणार्थी गृहों में आश्रय लेते है और खुद के संचय द्वारा इकट्ठा किये गये सामान और सरकारी और गैर सरकारी संगठनो द्वारा दिये जाने वाले तत्कालीन सहायता से जीवन यापन करते है। व्यवसायिक अजीविका से जुड़े लोगों के बाढ़ के समय दोहरे नुकसान को सहना पड़ता है। जहाँ एक तरफ पूर्व में संचित की गई धनराशि बाढ़ के समय में सब खत्म हो जाती है वही बिमारी की स्थिति उन्हें ऋण के संकट में डाल देती है। जीवन के इसी चक्र में वह वर्ष भर घूमता है और केवल जीवित रहता है उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता है।

अतः व्यवसायिक अजीविका लोगों में आय का अच्छा स्रोत है किन्तु बाढ़ के प्रतिकूल प्रभाव के कारण उनकी आर्थिक स्थिति जीवन निर्वाह के स्तर पर बनी रहती है।

औद्योगिक आजीविका पर प्रभाव

मानव का औद्योगिक पक्ष उसकी निर्माण कार्य की प्रवृत्ति का संगठित रूप से व्यक्त करने की पारिभाषिक शब्दावली है जिसमें एक व्यक्ति समाज के अन्य लोगों के साथ मिलकर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है। और उससे प्राप्त आय के द्वारा वह अपने उद्योग के कार्य को विस्तृत करता है और अपने तथा समाज के जीवन के आर्थिक स्तर को ऊपर उठाने का प्रयास करता है। जिसका निर्माण क्षेत्र, कार्य, आवश्यकता, समय, संसाधन की उपलब्धता के अनुसार होता है।

शोधार्थी का कार्यक्षेत्र बलिया जनपद का काजीपुर गाँव है जहाँ के लोगों का औद्योगिक गतिविधियों की अजीविका से जुड़ाव के आधार पर शोधार्थी ने स्वयं के विवेक से औद्योगिक अजीविका के क्षेत्रों में चिन्हित किया है जिसके अन्तर्गत ईट भट्टा, कोल्ड स्टोर, सीमेन्ट गमला निर्माण, राईस मिल, फास्ट फूड निर्माण इत्यादि कार्यो को औद्योगिक अजीविका के रूप में चयनित किया गया है। शोधार्थी ने काजीपुर गाँव के 1710 लोगों में से 250 व्यक्तियों को औद्योगिक अजीविका से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुये लोगों के रूप में किया है।

औद्योगिक अजीविका से जुड़े हुये 250 व्यक्तियों में अधिकांश लोग भट्टों, मिलों, गमला उद्योग इत्यादि में श्रमिक के रूप में कार्य करने वाले है जो 'रोज–कमाओ रोज खाओ' के जीवन सिद्धान्त से जुड़े हुये है और ये ज्यादातर गाँव के बाहर अपने सम्बन्धित उद्योगों में रहते है जो समय–समय पर घर आते है और अपने घर के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। बाढ़ के समय जब ये अपने घर आये और तब प्रत्यक्ष संवाद शोधार्थी से हुआ जिससे पता चलता है कि जब बाढ़ आती है तो उनके घर गिर जाते है, पशु–जानवर बह जाते है या मृत हो जाते है। घर के सभी सदस्यों की सुरक्षा और जीवन–यापन के लिए इन्हें सदस्यों के साथ ही शरणार्थी शिविरों में रहना पड़ता है। काम पर न जा पाने की अवस्था में काम छूट जाता है जिससे उनकी सारी जमा पूँजी बाढ़ से उबरने में ही खत्म हो जाती है और सरकार से जो सहायता प्राप्त होती है जो नाम मात्र की होती है। अपनी स्थिति को पुनः सुधारने का प्रयास करते है किन्तु वे अकुशल श्रमिक के रूप में कार्य करते है। इस कारण किसी कार्य में दक्षता न होने पर मजदूरी ही सहारा होती है। बाढ़ के समय सम्पूर्ण गाँव समाज पर संकट होता है इस रूप में वे केवल किसी प्रकार भोजन और वस्त्र की व्यवस्था कर पाते है बहुत समस्या में समय व्यतीत होता है।

अतः स्पष्ट है कि औद्योगिक आजीविका में लगे हुये लोग आपका सृजन करते है किन्तु बाढ़ के समक्ष इनके घर–परिवार पर जो संकट आता है उससे उबरने के लिए सब खर्च हो जाता है इस अवसर पर ये विवश होते है और असहाय होकर अपनी नीयती को कोसते है।

बाजार आजीविका पर बाढ़ का प्रभाव

बाजार मानव आवश्यकताओं की पूर्ति का वह स्थान है जहाँ एक साथ कई वस्तुएँ उपस्थित होती है जिसे व्यक्ति क्रय–विक्रय के माध्यम से समाज की विपणन व्यवस्था को गति प्रदान करता है। वास्तव में बाजार व्यवस्था ही आजीविका को प्रकट करती है, जिसमें व्यक्ति के लिए बहुत सारे विकल्प मौजूद होते है जिनका चयन करके व्यक्ति उसे अपना पेशा बनाता है और उसके द्वारा प्राप्त होने वाली आय से वह अपना जीवनयापन करता है जिसके समग्र रूप को बाजार आजीविका कहा जाता है।

शोधार्थी के अध्ययन क्षेत्र बलिया के काजीपुर गाँव के लोगों की आजीविका का अध्ययन बाढ़ के परिप्रेक्ष्य में किया गया है जहाँ शोधार्थी ने अपने विवेक से बाजार आजीविका के अन्तर्गत फेरीवाले, ठेला वाले, सब्जी बेचने वाले, चाय–नाश्ता की दुकान वाले, मिष्ठान भण्डार, किराना दुकान, इलेक्ट्रानिक दुकान, बर्तन की दुकान, बीज भण्डार, खाद भण्डार, मेडिकल स्टोर इत्यादि को शामिल किया है।

बलिया के काजीपुर गाँव की बाजार गाँव के केन्द्र में है जहाँ संयुक्त रूप से कई गाँव के लोग मिलते है। बाजार की प्रकृति में देखा जाये तो शहरी क्षेत्रों में प्रतिदिन बाजार होती है किन्तु कस्बाई और ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष दिन बाजार होती है जिसमें व्यक्ति अनेक प्रकार के सामानों का क्रय–विक्रय करता हैं।

काजीपुर गाँव के लोग बाजार आजीविका के अन्तर्गत बहुत सारे धन्धे करते है ऐसे में कुल 1710 व्यक्तियों में से 300 व्यक्तियों का चयन किया गया है जो बाजार आजीविका पर आधारित जीवन जीते है।

फेरीवाले बच्चों और महिलाओं के साज–श्रृंगार, ठेला वाले विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थ जैसे–समोसा, टिकिया, पकौड़ा, चाउमीन इत्यादि विक्रय करते है। वहीं सब्जी वाले गाँव के चौराहों पर क्रय–विक्रय करते है। ये सभी अस्थायी बाजार आजीविका के रूप में कार्य करते है क्योंकि यह इसमें संलग्न व्यक्ति की इच्छा द्वारा निर्धारित होता है। बाजार आजीविका का एक–एक स्थायी रूप में दिखाई देता है जिसमें मिष्ठान भण्डार, चाय–नाश्ता की दुकान, किराना की दुकान, इलेक्ट्रानिक सामान की दुकान, बीज भण्डार, खाद भण्डार, मेडिकल स्टोर इत्यादि आते है। वे स्थायी बाजार आजीविका के स्रोत व्यक्ति की इच्छा पर नहीं बल्कि बाजार की दशा पर निर्भर होते है।

बाढ़ की दशा में अस्थाई बाजार आजीविका पूरी तरह से प्रभावित हो जाती है। जलभराव के कारण बाजार नहीं लगती जिस कारण इसमें लगे व्यक्ति बेकार हो जाते है और उनको अनेक प्रकार की समस्या उत्पन्न हो जाती है जबकि स्थाई बाजार आजीविका में लगे व्यक्ति दुकानों में पानी जाने से पूर्व सामान को हटा लेते है किन्तु दुकानें बन्द हो जाती है और बन्द अवस्था में उनके सामान खराब हो जाते है। इस तरह से बाढ़ बाजार आजीविका के अन्तर्गत समस्त कार्यों को प्रतिकूल रूप में प्रभावित करती है। जिससे व्यक्ति संघर्ष करता है और समस्या में जीवन–यापन करता है। स्थायी बाजार आजीविका में 100 व्यक्ति तथा अस्थायी बाजार आजीविका में 200 व्यक्तियों को शामिल किया गया है।

स्पष्ट है कि सामान्य दिनों में बाजार आजीविका में लगे लोग जीवनयापन करते है बाद की अवस्था में उनके ये सभी संसाधन क्षतिग्रस्त हो जाते है जिससे उनको आर्थिक तंगी का शिकार होना पड़ता है। और सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों द्वारा दिये गये अनुदानों से अपना कार्य करते है।

सामान्य आजीविका पर बाढ़ का प्रभाव

सामान्य आजीविका के रूप में वे कार्य आते है जो व्यक्तियों की सामान्य जीवन शैली में शामिल होते है इन कार्यो के द्वारा व्यक्ति अपनी आजीविका चलाता है जो प्रकृति द्वारा प्रदत्त साधनों के रूप में पहचाने जाते है जिन्हे व्यक्ति करता है और उससे अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस श्रेणी के कुछ कार्य व्यक्ति की स्वयं की शारीरिक भौतिक क्षमता के कारण आजीविका का साधन बनते है।

शोधार्थी ने बलिया जनपद के काजीपुर गाँव में सामान्य आजीविका के रूप में कृषि कार्य, कृषक मजदूर, घरेलू नौकर, पुजारी, वाहन चालक, घर निर्माण राजगीर इत्यादि कार्यों को चिन्हित किया है।

बाढ़ की स्थिति में सबसे ज्यादा समय तक प्रभाव सामान्य आजीविका के कार्यों पर पड़ता है। उदाहरण स्वरूप कृषि कार्य को लिया जा सकता है जहाँ बाढ़ कृषि योग्य खेतो में पहुँचकर जल भराव फसलों से नष्ट कर देती है वही भूमि फिर से कृषि योग्य होने में काफी समय लेती है इस दौरान खेतों की स्थिति बहुत खराब होती है जिससे किसी भी प्रकार का उत्पादन सम्भव नहीं होता है। इसी से जुड़े कृषक मजदूर की इस अवस्था में कार्य न मिलने की स्थिति में बेकार पड़े रहते है और अपनी आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति के लिए दूसरे की कृपा पर निर्भर हो जाते है।

इस सामान्य आजीविका में नौकर बन कर जीवन यापन करता कृषक कृषि मजदूरी न मिलने के कारण ज्यादा परेशान पाया गया। वे सभी कार्य प्रकृति द्वारा प्रदप्त स्थिति से ही निर्मित होते है और प्रतिकूल रूप से प्रभावित होते है।

शोधार्थी द्वारा अध्ययन के दौरान साक्षात्कार अवलोकन से पता चलता है कि वैयक्तिक गुण के कारण जो कार्य क्षमता आजीविका का साधन बनती है उसमें पूजा–पाठ के कार्य, यातायात चालक, और राजगीर है जो बाढ़ की अवस्था में कार्य विहीन हो जाते है। बाढ़ का प्रभाव इनके जीवन के हर पहलू को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है।

शोधार्थी द्वारा अनुसूची साक्षात्कार से पता चलता है कि

- सामान्य आजीविका में चयनित लगभग 80% लोग कृषि से जुड़े है जिनकी आजीविका मासिक रूप से बहुत कम है वे परम्परागत तरीके से जीवन यापन करते है और बाढ़ की अवस्था में घर'–वार छोड़कर शरणार्थी शिविरों में रहते है। जीवन यापन के लिए बहुत कठिन परिश्रम करते है जिसके उपरान्त भर पेट भोजन भी नहीं प्राप्त हो पाता है।

इन लोगों के घर गिर जाने पर पुर्नवास की बहुत समस्या होती है कुछ समय बाद जब ये सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा नही कर पाते तो या तो भाग जाते है या आत्म हत्या के लिये विवश हो जाते है।

- सामान्य आजीविका के क्षेत्र में घरेलू नौकर के रूप में वही कृषक मजदूर कार्य करते है जो कृषि के नष्ट हो जाने पर कार्य नहीं पाते। घरेलू नौकर के रूप में कार्य करने वाले लोग भोजन, वस्त्र और कुछ नगद मुद्रा प्राप्त करते है और दिन–रात सेवा देते है। ये दूसरे गाँव में जाकर या दूसरे शहरों में जाकर ऐसा करते है।
- सामान्य आजीविका के रूप में पुरोहित वर्ग के सम्बन्ध में धार्मिक कृत्य बन्द हो जाने से संकट में आ जाते है और जीवन यापन के लिए सरकारी एवं गैर–सरकारी सहायता पर केन्द्रित हो जाते है।
- बाढ़ की अवस्था में सामान्य दिनचर्या बाधित होने के कारण यातायात चालक अपने कार्य को छोड़कर परिवार की रक्षा के लिए उनके साथ ही रहते है या अपने साथ परिवार को गाँव से दूर ले जाते है। जिससे उन पर अतिरिक्त आर्थिक भार पड़ता है जिससे वे संकट में आ जाते है।
- बाढ़ की अवस्था में निर्माण कार्य बन्द हो जाते है जिस कारण गाँव के राजगीर शहरों की तरफ पलायन कर जाते है। किन्तु परिवार के पोषण और सुरक्षा का भय उन्हें उनके कार्यों से विचलित कर देता है जिस कारण वे सब कुछ छोड़कर परिवार की देखभाल करते है और आभाव में जीवन यापन करते है।

अतः बाढ़ की अवस्था में काजीपुर गाँव के सामान्य आजीविका से सम्बन्धित जनमानस भयंकर रूप से अपने आप को प्रतिकूल पाता है और जीवित रहने के लिये प्रतिफल संघर्ष करता है।

सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्र में कार्यरत लोगों की आजीविका पर बाढ़ का प्रभाव

आधुनिक समय में भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसमें कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं व्यवस्थापिक के माध्यम से एक सरकारी तंत्र की व्यवस्था स्थापित है पढ–लिख कर प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से सरकार के तीनो अंगो में देश के नागरिक अपनी सेवा देकर आजीविका का निर्माण करते है यही सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र की आजीविका के रूप में शोधार्थी द्वारा चिन्हित किया गया है। जिसके कुल 1710 में से 120 लोगों का चयन किया गया।

अध्ययन क्षेत्र बलिया के काजीपुर गाँव में चयनित 200 परिवारों में मात्र 10 व्यक्ति सरकारी सेवाओं में कार्यरत मिले जिनसे टेलीफोन साक्षात्कार से सम्पर्क स्थापित किया गया और यह स्पष्ट होता है कि :

- सरकारी कार्य क्षेत्र के लोग गाँव से पलायन करके कार्यरत स्थान पर निवास करने लगे है।
- बाढ़ के समय पर अपने परीजनों की आर्थिक सहायता करते है लेकिन अपेक्षा से कम।
- कुछ लोग अब अपने गाँव परिवार से कोई मतलब नहीं रखते। अपनी सम्पत्ति बेचकर पलायन कर गये है।
- गैर सरकारी (प्राइवेट) सेवा से जुड़े लोगों की संख्या 110 थी जो बाढ़ से प्रभावित होकर अपने कार्यों को छोड़कर घर–परिवार की रक्षा करते है और कठिन जीवन जीते है।

आजीविका और प्रवासन : बाढ़ के विशेष परिप्रेक्ष्य में

मानव जीवन अनेक विडम्बनाओं का संकुल है। मानव की समाज व्यवस्था उसके खुद के अनुभव का स्वयं को व्यवस्थित करने का परिणाम है। शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र बलिया जनपद का काजीपुर गाँव बाढ़ जनित समस्या का उत्कृष्ट उदाहरण है, इस गाँव में बाढ़ से अनेक समस्रूा जन्म लेती है किन्तु प्रवास की समस्या सबसे विकट है।

चूँकि बलिया जनपद की भौगोलिक संरचना और गंगा, घाघरा इत्यादि नदियों की मौमसी प्रकृति सैकड़ों वर्षों से लोगों के सामाजिक जीवन पर प्रभाव डालती रही है जिससे अनेक सामाजिक–संघर्ष जन्म लेते रहे है जिससे यहाँ की जनसंख्या तथा सबसे महत्वपूर्ण उसकी आजीविका नकारात्मक रूप से प्रभावित होती रही है। इन सभी समस्याओं में सर्वाधिक गहरा सामाजिक प्रभाव प्रवास का पड़ा है।

काजीपुर गाँव में प्रवास की प्रकृति अनेक रूपों में खुद को व्यक्त करती है जैसे

- अल्पकालिक प्रवास
- विशेष प्रवास
- दीर्घकालिक प्रवास
- स्थायी प्रवास
- यह उपरोक्त प्रवास के रूप काजीपुर गाँव के लोगों पर बाढ़ के सामाजिक प्रभाव को व्यक्त करती है।

अल्पकालिक प्रवास

काजीपुर गाँव में जब बाढ़ आती है तो लोग अपने घरों को छोड़कर सरकार द्वारा या गैर–सरकारी संगठनों द्वारा बनाये गये सुरक्षा कैम्पों में कुछ समय के लिए रहने चले जाते है और बाढ़ के खत्म होने पर पुनः अपने घरों में वापस आ जाते है, यह केवल बाढ़ के समय अपना मूल स्थान छोड़ते है इस कारण इसे अल्पकालिक प्रवास के रूप में शोधार्थी ने चिन्हित किया है।

विशेष प्रवास

बाढ़ के दौरान काजीपुर गाँव के ऐसे लोग जिनका घर, जमीन सब नष्ट हो जाती है तो वे लोग कुछ दिन राहत शिविरों में गुजारने के बाद परिवार सहित दूसरे शहर या महानगरों में परिवार सहित पलायन कर जाते है किन्तु आर्थिक स्थिति सुधरने पर वे पुनः पुर्नवास करते है, इस स्थिति को शोधार्थी ने विशेष प्रवास के रूप में चिन्हित किया है।

दीर्घकालिक प्रवास

जब बाढ़ के कारण व्यक्ति अपने मूल स्थान से लम्बे समय के लिए दूर हो जाता है तो इसे दीर्घकालिक प्रवास कहा जाता है। काजीपुर गाँव में 200 परिवारों में 23 परिवार ऐसे थे जो लम्बे समय से बाहर है उनसे साक्षात्कार के दौरान पता चला कि जब वे गाँव छोड़कर गये थे उनकी बाढ़ के द्वारा जन, धन, जमीन, सम्पत्ति, धन्धा सब नष्ट हो गया था। अचानक आयी बाढ़ से परिवार के सदस्य बह गये, जानवर बह गये, घर गिर गया, परम्परागत पेशा नष्ट हो गया, उनकी सहायता किसी ने नहीं की जो थोड़ी सी सहायता मिली वह उनके जीवन के पुनर्निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं थी जिस कारण इन परिवारों ने गाँव छोड़ दिया जो आस–पास के क्षेत्रों में बस गये। परिणामस्वरूप घर के सदस्यों का विकास बाधित हो गया बच्चे शिक्षा के अभाव में मजदूर बन गये, स्त्रियाँ अविवाहित रह गयी, जिनका विवाह हुआ उन्हें अच्छे परिवार नहीं मिले विवाह के बाद वे मजदूर बन गयी। घर के बड़े बुजुर्ग बीमारी के कारण खुद को नहीं बचा सके, नवजवानों के पास परिवार के पालन का बोझ था धन्ध के नष्ट होने पर काम के ठेकेदारों द्वारा उनका शोषण होने लगा अधिक काम के बदले कम पारिश्रमिक मिलता था, काम की कमी और बेरोजगारी के कारण मजबूरी में शोषण का शिकार हुए और इस मानसिक दबाव ने उनमें नशे की प्रवृत्ति को जन्म दिया जिससे उनकी स्थिति और दयनीय हो गयी और 'रोज कमाओ रोज खाओ' की जीवन दशा में ये लोग अपने मूल निवास स्थान से दीर्घकालिक प्रवास कर गये।

स्थायी प्रवास

ऐसी अवस्था जब व्यक्ति हमेशा के लिए अपना मूल निवास स्थान छोड़कर दूसरे स्थान या शहर में रहने लगता है तो इसे स्थायी प्रवास कहा जाता है। अध्ययन क्षेत्र काजीपुर में बाढ़ की समस्या प्राचीन समस्या है जिस कारण लोगों का पलायन यहाँ की मूल प्रवृत्ति बन गयी है।

लोगों के आजीविका, परम्परागत, सम्पत्ति (भूमि, घर, विरासत आदि) से सम्बन्धित तथ्यों के उद्घान से पता चलता है कि लोगों के पास ऐसी जमीनें और घर है जो उनके नहीं है वे उन लोगों के है जो इस दुनिया में नहीं है या तो कहीं बाहर रहते है कभी नहीं आते, कुछ जमीनें ऐसी है जो लोग बेचकर चले गये।

ऐसी भूमि और घर जिसके लोग का कुछ भी पता नहीं है ग्रामीणजनों का कहना है कि या तो वे बाढ़ में गये या तो संक्रामक बीमारी से मृत हो गये, सरकारी दस्तावेजों में नाम तो है लेकिन प्रत्यक्ष कोई सदस्य नहीं है। ऐसी सम्पत्ति गाँव में विवाद का कारण भी है क्योंकि इस पर अधिकार को लेकर प्रभुत्वशाली व्यक्तियों में आये दिन संघर्ष होते रहते है यह सामाजिक सौहार्द को असन्तुलित करने का कारण भी है।

बहुत सारे ऐसे लोग जो प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो गये और अपने कार्यक्षेत्र में ही निवास बनाकर रहने लगे इन लोगों ने स्थानीय लोगों को अपनी सम्पत्ति बेच दी और हमेशा के लिए मूल स्थान छोड़कर चले गये।

कुछ लोग ऐसे भी मिले जो हर साल के बाढ़ संकट से बहुत परेशान थे वे इस ताक में है कि कोई अच्छी रकम उनकी सम्पत्ति की मिल जाये तो वे हमेशा के लिए गाँव छोड़ देंगे बाहर वो कुछ भी करके अपना जीवन–यापन कर लेगें।

काजीपुर गाँव के लोग अपने मन में पलायन की प्रवृत्ति को रखे रहते है यदि बाहर उन्हें कोई अच्छा कार्य मिल जाता है तो वे गाँव से हमेशा के लिए स्थायी प्रवास कर जाते है।

इस प्रकार प्रवास काजीपुर गाँव का बाढ़ जनित भाग्य है जो प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में नियति बनकर प्रकट होती है और व्यक्ति पलायन कर जाता है। बाढ़ का प्रवास प्रभाव लोगों की सामाजिक संरचना और संगठन को पूरी तरह बदलने के लिए बाध्य कर देता है जिससे लोगों की भेद्यता और लचीलेपन की प्रवृत्ति प्रकट होती है।

जहाँ बाढ़ लिंग भेद, सामाजिक दूरी, विवाह, परिवार, नातेदार की दशाओं को भेद्यता के रूप में प्रकट करती है वही अपनी स्थितियों से लड़ते रहना, हार–जीत में समझौता की प्रवृत्ति, कम मजदूरी पर कार्य करना, सहायता के लिए दूसरे पर आश्रित रहना लचीलेपन की स्थिति को प्रकट करती है।

होमियोस्टैटिक दृष्टिकोण से काजीपुर गाँव के लोग बाढ़ जैसी समस्या से निपटने के लिए खुद की क्षमता से अनेक सामूहिक उपाय विकसित किये है जैसे बाढ़ के समय, सामूहिक भोज, एक दूसरे के परिवार की रक्षा, जानवरों के लिए सामूहिक प्रयत्न, शादी–विवाह के अवसर पर हर सम्भव सहयोग इत्यादि। फिर भी प्रभावित है।

विकासात्मक दृष्टिकोण से सरकारी तथा गैर–सरकारी सहायता से आजीविका के लिए पुर्ननिर्माण के लिए अनेक प्रयास हुए है जैसे घर की क्षति, शारीरिक क्षति पर सरकार द्वारा अनुदान, मछली पालन, मुर्गी पालन, बागवानी, कृषि सुधार, मनरेगा में मजदूरी, मुफ्त राशन, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त दवा इत्यादि से बाढ़ प्रभाव को कम करने के प्रयास किये गये है किन्तु दोनों दृष्टिकोण के प्रयास पूरी तरह प्रभावी नहीं है लोगों की आवश्यकतायें, चिन्तायें और परिस्थितियाँ उन्हें प्रवास या पलायन के लिए मजबूर कर देती है जो काजीपुर के लोगों का प्राकृतिक सत्य बन गया है जो बाढ़ के सामाजिक संरचना पर प्रभाव का उत्कृष्ट उदाहरण है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि काजीपुर गांव मे बाढ़ का सर्वाधिक प्रभाव लोगो की आजीविका पर पडता है परिणाम स्वरूप लोग मजदूर बनने के लिए बाध्य हो जाते है जिससे लोगो की सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था प्रभावित होती है जिस कारण वे सामाजिक–आर्थिक रूप से असहाय महसूस करते है और शोषण का शिकार होने लगते है।

सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनो की भूमिका उनके जीवन को प्रभावित होने से बचाती जरूर है किन्तु सामालिक कल्याण को सुनिश्चत करने के लिए पर्याप्त नही है।

बाढ़ का एक विशेष प्रभाव प्रवासन की प्रक्रिया पर दिखाई देता है जहां ग्रामीण जन अपने जीवन की रक्षा के लिए मूल स्थान से दूसरी जगहो पर पलायन कर जाते है जो अल्पकालिक, विशेष, दीर्घकालिक और अस्थायी प्रवास के रूप मे परिलक्षित होता है।

इस प्रकार बलिया के काजीपुर गांव में बाढ़ का आजीविका का सामाजिक प्रभाव अत्यंत व्यापक है जिससे लोगो की रक्षा करने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारो द्वारा विशेष कार्यक्रम, प्रशिक्षण, अनुदान, आजीविका की वैकल्पिक व्यवस्था,

पलायन रोकने के उपाय किये जाने की आवश्यकता है तभी बाढ़ के सामाजिक प्रभाव के नाकारात्मक रूप को साकारात्मक दिशा दी जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गांगुली के0के0, (2006) व्यावसायिक दृष्टिकोण की आवश्यकता योजना, वर्ष–50, अंक–2 पृ0 19–20।
2. गैहा, राधव एवं थापा, गणेश (2006) 'प्राकृतिक आपदाओं के आधात का शमन, योजना वर्ष–50 अंक–2 पृ0 26–27।
3. घाघरा–दियारा क्षेत्र की मृदाये एवं प्रबंध (1995) कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश, मृदा सर्वेक्षण इकाई गोरखपुर पृ. 1–3।
4. हेमन्त, रणजीव, (1991) 'नदी बधी' जय प्रभा अध्ययन एव अनुसंधान केन्द्र, मधुपुर, देवघर, बिहार।
5. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, (2008) आपदा प्रबंधन, भाग, 1–7 सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, नई दिल्ली।
6. चन्द एन० (2003) 'खतरे का निशान' भूगोल और आप, खण्ड–2 सं0 5, पृ0 5–8।
7. जिला आपदा प्रबंधन योजना (2009) जनपद गोरखपुर, पृ0 96।
8. जाट, बी0सी0 (2007) आपदा प्रबंधन, मंथन पब्लिकेशन्स, जयपुर 64–80.
9. झुनझुनवाला, भरत, (2007) 'बाधों से नहीं थमेगी बाढ़ दैन्तिक जागरण, गोरखपुर, पृ0 10।
10. कुरैशी, एम.एच. (2004) 'नदियों को जोडने का प्रयास' बाढ़ नियंत्रण का रहस्य, पृथ्वी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 84।
11. कुमार, शील (2007) 'पर्यावरणीय आपदा प्रबन्धन', ज्योति इण्टरप्राइजेज, जवाहर नगर, दिल्ली।
12. कुमार, ध्रुव (1997) 'घाघरा/करनाली/राप्ती नदी घाटियों में उत्पन्न बाढ़ एवं जलजमाव पर एक अध्ययन रिपोर्ट', नवचेतन, शक्तिनगर, लखनऊ उ0प्र0।
13. मिश्र, दिनेश कुमार, (1994) बंदिनी महानन्दा, समता प्रकाशन प्रा0लि0 पूर्वी लोहानीपुर पटना।
14. मिश्र, दिनेश कुमार, (2000) बोया पेड़ बबूल का बाढ़ नियंत्रण के रहस्य पृथ्वी प्रकाशन नर्ह दिल्ली।
15. मेनन, एन0 विनोद चन्द्र (2009) 'आपदा प्रबन्धन प्रयासों में आमूल परिवर्तन योजना वर्ष 53 अंक पृ0 11–14.
16. पाण्डेय, जे0एन0ए (1991) 'संसाधन उपयोग एवं सरंक्षणः सरयूमार मैदान का एक प्रतीक अध्ययन सुन्धारा प्रकाशन, गोरखपुर।
17. सिंह, दुर्गेश पाप (1983) घाघरा बेसिन मैदान (उ0प्र0) में जल प्रबन्ध एवं संविकास, अप्रकाशित शोध प्रबंध दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
18. सिह, संजीव कुमार (2002) सरकार मेन (२) में अपएवं प्रादेशिक विकास अपकाशित शोध प्रबंध, दीद गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
19. सिंह, सविन्द्र (2014) 'आपदा प्रबन्धन', प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद पृ0 170–186।
20. सिन्हा, राजन, (2000) नयी नीति नया प्रयास, योजना, वर्ष–50 अंक–2 पृ0 21–25.
21. शमी, सुरेशचन्द एवं मिश्र, ओंकार प्रसाद, (1979) गोण्डा जनपद की बाढ़ समस्या एवं भौगोलिक विश्लेषण, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, भाग XV (I) पृ0 12–27.
22. श्रीवास्तव रमेश चन्द (1975) राप्सी बेसिन में बाढ़ जल का सरंक्षण एवं नियोजन उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, भाग XI (I) पृ0 37–46।.
23. श्रीवास्तव, सुभाष चन्द, (2007) बाढ़ पूर्वान्चल की स्थायी त्रासदी दैनिक जागरण, गोरखपुर, पृ0 10।
24. श्रीवास्तव, पी. के. (2005) आपदा प्रबंधन भाग–2 पृ0 23–24।
25. श्रीवास्तव, हरिनारायण एवं राजेन्द्र प्रसाद (2010) प्राकृतिक आपदाएँ और बचाव, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0लि0 नई दिल्ली।
26. सिचाई विभाग, उत्तर प्रदेश (2008) अनुसंधान एवं नियोजन (बाढ़) मण्डल लखनऊ, पृ0 6–10।
27. सिन्हा, उत्कर्ष कुमार (10 सितम्बर 09) इंसेफेलाइटिस के मारे बदनसीब बच्चे, अमर उजाला पृ0 3
28. टावरी, कमल (2006) आपदा प्रबन्धन एवं पंचायती राज सशक्तीकरण कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
29. त्रिपाठी, शैलेश, (2007) 'बाढ़ राहत दैनिक जागरण, गोरखपुर पृ01।
30. उत्तर प्रदेश का नियोजन एटलस (1988) नियोजन विभाग उ0प्र0 सरकार लखनऊ, प्लेट सं0 उत्तर प्रदेश में बाढ़ग्रस्त क्षेत्र (1996) भूमि उपयोग परिषद, नियोजन विभाग उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ पृ0 11–13।
31. वजीह, शीराज अहमद, (2007) बाढ़ स्थितियों से निबटने की सामुदायिक क्षमताएँ, गोरखपुर एन्वायर्नमेटल एवशन ग्रुप गोरखपुर।
32. यादव, रामानन्द (1994) पूर्वी उ0प्र0 के तराई क्षेत्र में नदी तंत्र की बाढ़ समस्यायें और विशेषताएँ अप्रकाशित शोध प्रबंध, एम0एम0एम0 इजी कॉलेज गोरखपुर।
33. जोशी, पी0सी0, खत्री,पी0 एंड शर्मा, के (2016): सोशल रिपॉन्स टू एक्सट्रीम वेदर इवेन्टस सम एम्पेरिकल ऐविडेन्सेस फ्रॉम इडिंया, द इस्टर्न एन्थ्रोपोलाजिस्ट 69(3–4):489–508।